

वसंत 2

पाठ 8 (शाम – एक किसान)

कविता का सार :-

प्रस्तुत कविता शाम – एक किसान में कवि सर्वेश्वरदयाल सक्सेना जी ने जाड़े की एक शाम के प्राकृतिक दृश्य का वर्णन किया है। इस दृश्य को देख कर ऐसा प्रतीत होता है कि जैसे पर्वत किसी किसान की तरह बैठा हुआ है, जिसके सिर पर आकाश एक साफे के रूप में प्रतीत हो रहा है। उसके घुटने पर जो चादर है वो नदी के जैसे प्रतीत हो रही है। उसके सामने सूरज चिलम की भांति जलता हुआ रखा प्रतीत हो रहा है। पास ही स्थित पलाश का जंगल जलती हुई अंगीठी के समान दिख रहा है। दूर पूर्व दिशा में अंधकार ऐसा लग रहा है जैसे कुछ भेड़ झुंड लगाकर खड़े हो। अचानक मयूर की आवाज आती है जिससे ऐसा प्रतीत होता है जैसे किसी ने किसान को आवाज दी हो। उसी के साथ ऐसा लगता है जैसे चिलम औंधी गिर पड़ी हो क्योंकि सूरज डूब गया और धुआँ उठने लगा अर्थात् सूर्यास्त होने से चारों ओर अंधेरा छाने लगा है।